इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के व्याख्यान पर शिव पर हुई चर्चा

सिटी रिपोर्टर • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'भगवान शिवः झारखंड और उसकी आदिवासी जनजातियों के आराध्य देवता' का आयोजन रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक व अनुसंधान संस्थान में किया। विशेष व्याख्यान मानवविज्ञानी डॉ कैलाश कुमार मिश्रा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत तथा झारखंड की जनजातियों में भगवान शिव की पूजा पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी भवेशानंद

शामिल हुए। उन्होंने भगवान शिव के समावेशी दर्शन और आदिवासी जीवन शैली के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त किए। क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा, डॉ दीपांकर चटर्जी, सुमेधा सेनगुप्ता आदि मौजूद रहे।

भगवान शिव पर विशेष व्याख्यान

रांची. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, रांची और रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान के सहयोग से भगवान शिवः झारखंड और उसकी आदिवासी जनजातियों के आराध्य देवता विषयक विशेष व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया. स्वतंत्र विद्वान व मानवविज्ञानी डॉ कैलाश कुमार मिश्रा (नयी दिल्ली) द्वारा प्रस्तुत किया गया. यह कार्यक्रम आरकेएमवीआरआइ के सेमिनार हॉल में हुआ. डॉ मिश्रा ने भारत और झारखंड की आदिवासी जनजातियों में भगवान शिव की पूजा पर गहन व्याख्यान दिया. उन्होंने शिव पूजा के ऐतिहासिक, मानवशास्त्रीय और सांस्कृतिक आयामों पर प्रकाश डाला. उन्होंने मैककूल के संदर्भ में बताया कि धर्म के दो रूप होते हैं. इसमें व्याख्यान में विद्वानों, छात्रों और स्थानीय समुदाय के लगभग 200 सदस्य शामिल हुए. मुख्य अतिथि स्वामी भावेशनंद, डॉ कुमार संजय झा, डॉ दीपंकर चट्टर्जी उपस्थित रहे. इस व्याख्यान का उद्देश्य झारखंड की आदिवासी जनजातियों में भगवान शिव के सांस्कृतिक और मानवशास्त्रीय महत्व का अन्वेषण करना था.

ी रांची

जनजातीय अनुष्ठान और लोककथाएं जीवंत शैव परंपरा

बोले डॉ कैलाश

200 विद्वान, विद्यार्थी और शोधार्थी मौजूद रहे विशेष व्याख्यान में

रांची, विशेष संवाददाता। रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थान, मोरहाबादी में बुधवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची की ओर से विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। उद्देश्य झारखंड की आदिवासी जनजातियों में भगवान शिव के सांस्कृतिक और मानवशास्त्रीय महत्व का अन्वेषण करना था।

मुख्य वक्ता मानवविज्ञानी डॉ कैलाश कुमार मिश्रा (नई दिल्ली) ने भारत और झारखंड की जनजातियों में भगवान शिव की पूजा, विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि धर्म के दो रूप हैं- विश्व धर्म और जनजातीय धर्म, जिसमें जनजातीय धर्म मूलतः धरती-आधारित धर्म है। इसी संदर्भ में शिव एक जनजातीय देवता के रूप में उभरते हैं। कहा कि जनजातीय अनुष्ठान, लोककथाएं और त्योहार शैव परंपरा की जीवंत परंपरा हैं, जो प्रकृति से जुड़े हुए हैं। उन्होंने जनजातीय आख्यानों को साझा किया, जो शिव और वनवासी समुदायों के स्थायी संबंध को दर्शाते हैं।

रामकृष्ण मिशन आश्रम, रांची के सचिव स्वामी भावेशनंद ने भगवान शिव के समावेशी दर्शन व आदिवासी जीवन शैली के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त किए, जो सादगी, प्रकृति के प्रति आदर और सामुदायिक सौहार्द पर आधारित है।